नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

स्वतंत्र, निष्पक्ष और शांतिपूर्ण चुनाव हो

चार राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश के लिए विधानसभा चुनाव की घोषणा के साथ देश में एक बार फिर लोकतांत्रिक प्रक्रिया का बड़ा पर्व शुरू हो गया है. चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का माध्यम नहीं होते, बल्कि यह जनता के विश्वास, भागीदारी और लोकतंत्र की मजबूती का सबसे बड़ा प्रतीक भी होते हैं. लेकिन इन घोषित चुनावों में सबसे अधिक संवेदनशील और चुनौतीपूर्ण चुनाव पश्चिम बंगाल के माने जा रहे हैं. इसकी वजह वहां की चुनावी हिंसा का लंबा और चिंताजनक इतिहास है.

पश्चिम बंगाल में चुनावों के दौरान हिंसा लगभग एक स्थायी समस्या बन चुकी है. चुनाव प्रचार के समय राजनीतिक दलों के समर्थकों के बीच झड़पें होना, मतदान के दिन बूथों पर कब्जा करने या मतदाताओं को डराने-धमकाने की घटनाएं सामने आना और चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद भी प्रतिशोध की हिंसा होना वहां की राजनीतिक संस्कृति का दुर्भाग्यपूर्ण हिस्सा बन गया है. कई बार यह हिंसा इतनी गंभीर हो जाती है कि आम मतदाता भय और असुरक्षा की भावना से मतदान केंद्र तक जाने से भी हिचकने लगता है. लोकतंत्र के लिए इससे बड़ी विडंबना और क्या हो सकती है कि नागरिक को अपने मताधिकार का प्रयोग करने के लिए भी भय से मुक्त वातावरण न मिले.

दिलचस्प तथ्य यह है कि देश के कई ऐसे राज्य, जिन्हें कभी सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील माना जाता था, वहां आज अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण चुनाव संपन्न हो रहे हैं. जम्मू-कश्मीर जैसे लंबे समय तक आतंकवाद से प्रभावित क्षेत्र में भी अब लोकतांत्रिक प्रक्रिया काफी हद तक शांतिपूर्ण ढंग से पूरी हो रही है. बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे बड़े और जटिल सामाजिक समीकरण वाले राज्यों में भी चुनाव आयोग की सख्ती और प्रशासनिक सतर्कता के कारण चुनावी हिंसा पर काफी हद तक नियंत्रण पाया गया है. यहां तक कि पूर्वोत्तर के कई राज्यों में भी चुनाव पहले की तुलना में कहीं अधिक शांतिपूर्ण हो गए हैं. इसके विपरीत पश्चिम बंगाल की स्थिति अलग दिखाई देती है. चाहे लोकसभा चुनाव हों, विधानसभा चुनाव हों, पंचायत चुनाव हों या स्थानीय निकायों के चुनाव, लगभग हर चुनाव के साथ हिंसा की खबरें जुड़ी रहती हैं. इस वजह से यह धारणा बन गई है कि पश्चिम बंगाल देश का शायद एकमात्र ऐसा राज्य है जहां बिना हिंसा के चुनाव की कल्पना भी कठिन लगती है. यह स्थिति न केवल लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए बल्कि राज्य की सामाजिक समरसता के लिए भी चिंताजनक है.ऐसे में पश्चिम बंगाल में शांतिपूर्ण और निष्पक्ष चुनाव कराना चुनाव आयोग के लिए बड़ी परीक्षा से कम नहीं है. आयोग को सुरक्षा बलों की पर्याप्त तैनाती, संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान, चरणबद्ध मतदान और कड़ी प्रशासनिक निगरानी जैसे उपायों को पूरी गंभीरता से लागू करना होगा. केंद्रीय सुरक्षा बलों की मौजूदगी और कड़ी चुनावी निगरानी से मतदाताओं में विश्वास पैदा करना भी उतना ही जरूरी है.

हालांकि यह भी उतना ही सच है कि केवल प्रशासनिक उपायों से इस समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो सकता. राजनीतिक दलों की जिम्मेदारी भी कम नहीं है. लोकतंत्र में राजनीतिक प्रतिस्पर्धा स्वाभाविक और आवश्यक है, लेकिन यदि वह हिंसा और प्रतिशोध की संस्कृति में बदल जाए तो यह लोकतंत्र के मूल्यों को कमजोर कर देती है. इसलिए सभी दलों को यह समझना होगा कि चुनावी जीत-हार से कहीं अधिक महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक व्यवस्था की प्रतिष्ठा और जनता का विश्वास है.पश्चिम बंगाल की पहचान लंबे समय तक बौद्धिक विमर्श, राजनीतिक चेतना और सांस्कृतिक जागरूकता के केंद्र के रूप में रही है. ऐसे राज्य में यदि चुनाव हिंसा का पर्याय बन जाएं तो यह केवल राजनीतिक विफलता नहीं बल्कि सामाजिक चिंता का विषय भी है. इसलिए जरूरी है कि इस बार के चुनाव एक नई परंपरा की शुरुआत करें, जहां मतदाता निर्भय होकर मतदान कर सकें और लोकतंत्र की असली ताकत मतपेटी के माध्यम से सामने आए.

बहरहाल,इस बार सभी पांच राज्यों में शांतिपूर्ण और निष्पक्ष चुनाव संपन्न होते हैं, तो यह न केवल चुनाव आयोग की बड़ी सफलता होगी बल्कि भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता और मजबूती का भी एक महत्वपूर्ण प्रमाण बनेगा. यही लोकतांत्रिक व्यवस्था की असली जीत होगी.

संवेदनशील न्यायिक तंत्र की आवश्यकता

सुशील कुमार
शोध छात्र, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

> जब कोई समर्थ, शिक्षित महिला केवल एक अनचाहे स्पर्श से वर्षों तक अपने भीतर असुरक्षा ढो सकती है, तो यह कल्पना सहज ही की जा सकती है कि वे बच्चियां, जो यौन शोषण जैसी गंभीर त्रासदी का सामना करती हैं, उनमें आत्मसम्मान, विश्वास और सुरक्षा को भावना किस गहराई तक आहत होती होगी. अत: यह केवल एक प्रशासनिक आवश्यकता नहीं, न्यायिक दायित्व का अनिवार्य विस्तार है कि संपूर्ण न्यायिक तंत्र यौन पीड़िताओं के लिए ऐसा परिवेश निर्मित करे, जो संवेदनशील, करुणामय एवं संरक्षात्मक हो.

पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाई कोर्ट के उस फैसले को रद कर दिया, जिसमें यौन अपराधों से बच्चों के संरक्षण अधिनियम, 2012 (पोक्सो) के एक मामले में समन के महत्व को कम कर दिया गया था. जज सूर्यकांत, जायमाल्य बागची और एनवी अंजारी की पीठ ने ट्रायल कोर्ट के मूल समन आदेश को बहाल किया और कहा कि प्रथमदृष्ट्या आरोपों से दुष्कर्म करने का प्रयास प्रतीत होता है, न कि केवल तैयारी. यही नहीं सुप्रीम कोर्ट ने लैंगिक संवेदनशीलता के नवीन मानकों को स्थापित करते हुए यौन अपराधों के मुकदमों में अधिक संवेदनशील और एकसमान न्याय निर्णय के लिए दिशा निर्देश तैयार करने की प्रक्रिया शुरू की.

इन निर्देशों को जारी करते हुए मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने लैंगिक रूढ़ियों से निपटने के लिए सुप्रीम कोर्ट द्वारा 2023 में जारी की गई हैंडबुक को रद कर दिया. उक्त मामला 17 मार्च, 2025 को इलाहाबाद हाई कोर्ट के उस निर्णय से संबंधित है, जिसमें उसने ट्रायल कोर्ट के समन को भारतीय दंड संहिता की धारा 376 के तहत दुष्कर्म के आरोप से घटाकर धारा 354 बी के तहत वस्त्र उतारने के इरादे से हमला कर दिया था. इसके साथ ही पोक्सो के संबंधित प्रविधानों को भी धारा 18 से घटाकर धारा 10 कर दिया गया था, जिसमें आजीवन कारावास की आधी सजा का नियम है, जबकि धारा 18 में 5 7 वर्ष के कारावास का प्रविधान है.

सुप्रीम कोर्ट ने यह माना कि देश की विभिन्न अदालतों में संवेदनशीलता को लेकर बरती जाने वाली सावधानी में कहीं न कहीं चूक हो जाती है, इसीलिए उसने यह कार्य प्रशिक्षण प्रणाली को सौंप दिया तथा भोपाल स्थित राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी से एक विशेषज्ञ समिति गठित करने का आग्रह किया. समिति को भाषाई विविधता और आम लोगों के लिए सुगम्यता का ध्यान रखते हुए एक व्यापक रिपोर्ट और दिशा निर्देशों का मसौदा तैयार करने को कहा गया है. न्यायालय का इस पर विशेष जोर था कि समिति प्रतिवेदन तैयार करते समय राष्ट्र की भाषाई विविधता को ध्यान में रखे. उसने यह भी इंगित किया कि विभिन्न क्षेत्रों की बोलियों में प्रचलित अनेक ऐसे शब्द एवं अभिव्यक्तियां हैं, जो सामान्य बोलचाल में प्रयुक्त होती हैं, पर वे दंड विधि के तहत आपत्तिजनक या अपराध की श्रेणी में आ सकती हैं.

अत: समिति का यह दायित्व होगा कि वह विभिन्न भाषाओं के ऐसे शब्दों की पहचान कर उनका संकलन करे, ताकि वे न्यायिक प्रक्रिया में अनदेखे न रह जाएं. सुप्रीम कोर्ट ने विशेषज्ञ समिति से इस विषय पर एक समग्र रिपोर्ट तैयार करने को कहा कि यौन अपराध के मामलों में न्यायिक प्रक्रिया में संवेदनशीलता कैसे विकसित की जाए.

इससे पूर्व अपर्णा भट बनाम मध्य प्रदेश राज्य, 18 मार्च, 2021 मामले में शीर्ष न्यायालय ने राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी से कहा था कि वह युवा न्यायाधीशों के प्रशिक्षण और न्यायाधीशों की सतत शिक्षा में लैंगिक संबेदनशीलता से संबंधित आवश्यक सामग्री को शीघ्रता से तैयार करे, जिसमें न्यायिक तर्क में अंतर्निहित रूढ़ियों और अचेतन पूर्वाग्रहों के प्रति पर्याप्त जागरूकता कार्यक्रम शामिल हों.

सुप्रीम कोर्ट लगातार देश की विभिन्न अदालतों द्वारा यौन अपराधों के मामलों में प्रदर्शित संवेदनात्मक कमी और रूढ़िगत दृष्टिकोण पर आपत्ति व्यक्त करता रहा है. हालिया निर्णय में भी सुप्रीम कोर्ट ने इसी चिंता को दोहराते हुए कहा, हमारे सभी निर्णयों में करुणा, मानवता एवं समझ की भावना झलकनी चाहिए. यही तत्व एक निष्पक्ष एवं प्रभावी न्यायप्रणाली के निर्माण के लिए जरूरी हैं.

यह टिप्पणी सिर्फ एक न्यायिक अवलोकन भर नहीं, संवेदनशील न्यायशास्त्र की दिशा में किया गया एक सशक्त और ऐतिहासिक हस्ताक्षर है. यह यौन शोषण से गुजरी पीड़िता के लिए आश्वस्ति और सहानुभूति का संदेश देती है. एक ऐसा ही संदेश हाल में उड़ीसा उच्च न्यायालय ने तब दिया, जब उसने कहा कि यौन अपराधों में सेक्सुअल इंटेट यानी यौन मंशा सबसे महत्वपूर्ण है. उसने यह भी कहा कि किसी लड़की के शरीर के ऊपरी हिस्से को छूना, दबाना और खींचना यौन उत्पीड़न है.

नि:संदेह यौनू अपराध की यातना को उसकी संपूष्य गहराई में वही समझ सकता है, जिसने उस आघात को अपने जीवन में भोगा हो. न्यायपालिका की यह मानवीय दृष्टि न केवल विधिक प्रक्रिया को अधिक करुणामय और उत्तरदायी बनाती है, बल्कि पीड़ितों के मन में न्याय व्यवस्था के प्रति विश्वास और गरिमा की भावना को भी पुनर्जीवित करती है.

मालवा- निमाड़ की डायरी

ठिकाने पर आए दो नावों के सवार डोडियार

संजय व्यास

दो नावों की सवारी करते आ रहे बाप पार्टी के प्रदेश से एकमात्र सैलाना विधायक कमलेश्वर डोडियार लगता है अब पूर्ण रूप से भारत आदिवासी पार्टी के लिए समर्पित हो गए हैं. बाप पार्टी के टिकट पर विधायकी हांसिल करने वाले कमलेश्वर अभी तक अपने-आप को जयस का व्यक्ति बताते रहे थे. कारण बाप पार्टी के संस्थापक मोहनलाल रोत से अनबन बनी हुई थी. कमलेश्वर डोडियार सदा मनमर्जी के कायल रहे और पार्टी आलाकमान की नहीं जमने वाली बातों की उपेक्षा करते रहे. यहां तक की लोकसभा चुनाव 2024 में जब पार्टी ने रतलाम-झाबुआ सीट से उनकी राय के बिना प्रत्याशी उतार दिया तो डोडियर खफा हो गए व बाप पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष रोत के सीधे निर्देश के बावजूद प्रत्याशी के प्रचार से खुद को दूर रखा.

इसके बाद रोत ने कारण बताओ नोटिस के साथ डोडियार को पार्टी से निकालने की चेतावनी भी दी थी. तब नोटिस के जवाब में बाप विधयक होते हुए भी खुद को जयस नेता बताया था, हालांकि बाद में कई संकटों से घिरने पर उनके तेवर नरम पड़े, क्योंकि उनके समर्थन में पार्टी ही खड़ी रही. अब विधायक और पार्टी के बीच चले आ रहे मतभेद और दूरियां भी मिटती नजर आ रही है. पिछले कुछ महीनों से प्रदेश अध्यक्ष केशुराम निनामा के होते हुए कार्यवाहक प्रदेश अध्यक्ष बनने के बाद से विधायक डोडियार लगातार पार्टी में सक्रिय दिखाई दे रहे हैं. तब से ही कमलेश्वर डोडियार ने भोपाल में पार्टी का प्रदेश स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन भी आयोजित करवाया था, जिसके बाद गोंडवाना क्षेत्र में पिछले महीने आठ दिवसीय पार्टी कार्यक्रम के लिए दौरा और झाबुआ और खरगोन में पार्टी की सदस्यता अभियान की रैली डोडियार नेतृत्व करते हुए दिखाई दिए.

165 पेड़ों को बचाने प्रकृति प्रेमियों का मोर्चा

मंदसौर जिले में सडक़ मार्ग बनाने मे कई पेड़ काट दिए. शासन के पर्यावरण बचाओ अभियान की हवा हवाई हो रही है. केवल भाषण और कागजों में पर्यावरण बचाओ अभियान और एक पेड़ माँ के नाम जैसे कई फोटो खिंचाओ काम आए दिन होते रहते हैं, लेकिन जो पेड़ हैं उनको नहीं बचाया जा रहा. अब जिले की गरोठ तहसील वर्तमान में विकास या कहे पर्यावरण के विनाश की ओर अग्रसर हो रही है. नगर की व्यवस्था में बड़ा योगदान हरे छायादार पेड़ों का है नगर की स्वच्छ वायु से लेकर स्वच्छ ऑक्सीजन स्वच्छ वातावरण सुंदरता बड़ा अद्भुत संगम इन पेड़ों के द्वारा गरोठ नगर का बना हुआ है. एमपीआरडीसी नगर के 165 पेड़ों के ऊपर अपनी कुल्हाड़ी घुमाने की तैयारी में है. अगर नगर के इन सब पेड़ों को काटकर यह रोड बना लेते हैं तो सोचिए कि जो तापमान वर्तमान में गर्मी में नगर के बीच में 42- 45 डिग्री के करीब है वह 50 से ऊपर जाएगा. उल्लेखनीय है कि एमपीआरडीसी समीप से गुजर रहे 8 लेन हाईवे से कनेक्टिविटी के लिए फोर लेन मार्ग बना रहा है. इन पेड़ों को बचाने के लिए प्रकृति प्रेमियों ने मोर्चा सम्हाल लिया है. उनका कहना है कि एक पेड़ तीन पीढियों से बड़ा होता है व कई पीढियों को पोषित करता हैं. ये जो 165 पेड़ है तीन पीढियों ने बड़ा किया है इन पेड़ों को बचाने के लिए अपनी आहुति लगती है तो वह भी देंगे.

मुख्य मंत्री की दिल्ली यात्रा ने कई की धड़कने बढ़ाई

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अचानक दिल्ली यात्रा और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात के बाद एक बार फिर मंत्री मंडल विस्तार की चर्चाएं तेज हो गई हैं. राजनीतिक गलियारों में पहले से ही यह चर्चा है कि प्रदेश में जल्द ही मंत्रिमंडल विस्तार हो सकता है और साथ ही निगम-मंडलों में भी नई नियुक्तियों की सूची जारी होने की संभावना है. ऐसे समय में मुख्यमंत्री का अचानक दिल्ली पहुंचना कई तरह की अटकलों को जन्म दे रहा है. सूत्रों का कहना है कि हिंदू नववर्ष में प्रदेश मंत्रिमंडल विस्तार की सौगात मिल सकती है. मोहन कैबिनेट में कुछ की छटनी और कुछ नए चेहरे शामिल होने की संभावना जताई जा रही है. मंत्री मंडल में 3 से 4 नए मंत्रियों को मौका देने की तैयारी की जा रही है. वैसे मुख्य मंत्री ने इस यात्रा को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से सौजन्य भेंट व मार्गदर्शन प्राप्त करने के साथ प्रदेश में चल रहे किसान कल्याण वर्ष के तहत आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों और गतिविधियों की जानकारी उन्हें देना बताया है. फिर भी इससे दावेदारों व विवादास्पद मंत्रियों की धड़कने बढ़ गई हैं.

सारी दुनिया के शेयर मार्केट में गिरावट

भारत में शेयर बाजार सामान्य निवेशक की भावना को अभिव्यक्त करता है. इतने पर भी वह देश की संपूर्ण अर्थव्यवस्था के मूल्यांकन का एकमात्र साधन नहीं है. इस बात पर सभी को ध्यान देना होगा. देशवासियों को जीडीपी, महंगाई दर, औद्योगिक उत्पादन बेरोजगारी, व्यापार घाटा तथा विदेशी मुद्रा भंडार जैसे आधारभूत मुद्दों पर निरंतर नजर रखते हुए स्थिति का आकलन करना चाहिए. इन सारी कसौटियों पर भारत की अर्थव्यवस्था की बुनियाद मजबूत है. वैश्विक संस्थाएं व रेटिंग एजेंसी भी इसकी पुष्टि करती है. इस समय यदि विदेशी संस्थागत निवेशकों के पैसा निकालने और युद्ध के माहौल में बाजार गिरा है तो आगे चलकर उठेगा भी. इसलिए सामान्य निवेशक को घबराकर बिक्री करने से बचना होगा. ऐसा कदम उठाना जल्दबाजी होगी. ठीक इसी प्रकार गिरता बाजार देखकर अभी निवेश करना भी उचित नहीं है क्योंकि मार्केट में और गिरावट आ सकती है. मार्केट को अपने सही स्तर पर पहुंचने देना होगा. संपूर्ण निवेश एक ही कंपनी के शेयर में न करते हुए विविधीकरण करने से जोखिम कम हो जाती है. आर्थिक दृष्टि से मजबूत कंपनी में ही दीर्घकालिक निवेश करना चाहिए. इसी तरह तेजी या मंदी की लहर में बहने की बजाय एसआईपी (सिस्टमेटिक इन्वेस्टमेंट प्लान) के जरिए लंबी अवधि के लिए निवेश करने का विकल्प लाभप्रद होता है. अपनी निवेश की क्षमता और मिलने वाले लाभ का उद्देश्य निश्चित कर कठिनाई के समय भी धैर्य रखना उचित होगा. शेयर मार्केट विविध कारणों से प्रभावित होता है. गत वर्ष के अंत में वह ऊंचाई पर जा रहा था लेकिन इस वर्ष वह गिरता जा रहा है. इजराइल व अमेरिका का ईरान के साथ युद्ध तथा होर्मुज खाड़ी में ईरान द्वारा जहाज रोकने से विश्व भर में तेल संकट उत्पन्न हो गया है.

इससे भारतीय पूंजी बाजार 533 अरब डॉलर नीचे चला गया. यह रकम अनेक देशों की अर्थव्यवस्था से भी अधिक है. पिछले गुरुवार व शुक्रवार को निवेशकों के क्रमश: 6 लाख करोड़ व 9 लाख करोड़ रुपये डूब गए.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

आप पुराना समय क्यों भूले घर-घर होते मिट्टी के चूल्हे

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, कहावत है घर-घर में मिट्टी के चूल्हे रहते हैं. इसका तात्पर्य है कि हर घर में कोई विवाद, मतभेद या छोटा-मोटा झगड़ा चलता है. इसलिए किसी की आलोचना करना ठीक नहीं है. बर्तन साथ में रहेंगे तो टकराएंगे ही.'

हमने कहा, 'रसोई गैस के संकट में आपको चूल्हे की याद आ गई. लोग गुस्से में यह भी कहते हैं कि हमारी बात नहीं मानते तो चूल्हे में जाओ. किसी को निकम्मेपन के लिए डांटो तो वह उल्टा जवाब देता है- मैं क्या अब तक भाड़ झोंक रहा था!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, इस समय बात चूल्हे की हो रही है. चूल्हा मानव का बड़ा आविष्कार है. आदिमानव ने चकमक पत्थर रगड़कर तीन पत्थरों के चूल्हे में लकड़ियों को जलाया और शिकार को भूनकर खाया. अब भी चाहो तो 3 ईंटें रखकर चूल्हा बना लो.'

हमने कहा, 'पंजाब में सांझा चूल्हा होता है. अपने घरों से महिलाएं गूंथा हुआ आटा लेकर आती हैं और वहां बारी-बारी से रोटियां बना लेती हैं. आपस में उनकी बातचीत भी चलती रहती है. ब्लैक एंड व्हाइट टीवी के जमाने में सांझा चूल्हा नामक सोप ऑपेरा या सीरियल हमने देखा था. गांव-देहात में जहां जलाऊ लकड़ी, गोबर के कंडे, कपास या तुअर की फसल के डंठल आसानी से मिल जाते हैं, वहां अब भी चूल्हा जलाया जाता है. हाईवे में पड़ने वाले ढाबे में लकड़ियों से तंदूर जलाया जाता है. उसमें तंदूरी रोटी बनती है. बारबेक्यू करने के लिए सलाख में पनीर, शिमला मिर्च, टमाटर लगाकर कोयले की आंच पर सेका जाता है. चूल्हे के खाने का स्वाद ही अलग होता है. आप मटका रोटी खाकर देखिए तो पता चलेगा. गैस के संकट की वजह से लोग फिर केरोसिन के स्टोव, कोयले की सिगड़ी और लकड़ी के चूल्हे पर वापस लौटेंगे. प्रधानमंत्री मोदी ने गरीबों और ग्रामीणों के लिए उज्ज्वला योजना शुरू की थी ताकि महिलाओं को चूल्हा फूंकने से उठने वाले धुएं से राहत मिले लेकिन उन्हें क्या पता था कि ईरान युद्ध के कारण गैस की कमी से जूझना पड़ेगा.'

पड़ोसी ने कहा, 'कभी चूल्हे का जिक्र फिल्मी गाने में भी होता था. महमूद का गाना आपको याद होगा- मेहबूबा मेहबूबा, बनालो मुझे दूल्हा, जला दो मेरा चूल्हा !'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12200 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2	■	3	4		5	6
7		8	■		■	9	
10			■		■		■
■	11		12		13		■
14	■	■	15			■	16
17		18		■	19	20	
	■		■	21	■	22	
23			■	24			■

बाएं से दाएं
1. सांप के समान लंबी एक मछली 3. शांतिमय (उर्दू) 7. जाड़े के दिनों में ओढ़ने का एक प्रकार का रूई भरा वस्त्र (उर्दू) 9. लीन, लिप्त 10. दीये के धुएं की कालिख जो आंख में लगाई जाती है 11. नकल करके बनाया हुआ, बनावटी 13. बीता हुआ, दशा, अवस्था 15. एक रोग जिसमें कोई अंग सुन्न या बेकार हो जाता है, फालिज 17. झपटकर या शीघ्रता से आगे बढ़ना, कोई वस्तु पाने के लिए हाथ आगे बढ़ाना 19. हिंदुओं के चार वर्णों में से दूसरा 22. समय, वक्त, मृत्यु 23. एक बालिश्त का दुधारा हथियार 24. अनुकृति, अनुकरण, कॉपी (उर्दू)

ऊपर से नीचे
1. छोटी लड़की, कन्या, बेटी (सं.) 2. रुपये के लेन-देन का व्यवहार करने वाला, श्रेष्ठ पुरुष 4. रक्षा करने वाला, पहरेदार 5. किसी वस्तु के टूटे-फूटे भाग को ठीक करना, जीर्णोद्धार (उर्दू) 6. झुका हुआ, विनीत 8. तख्ता, आकाश 12. निगलना 13. झरोखा (सं.) 14. पैरों में लगाने का अलता, महावर (सं.) 16. पाजेब, नुपूर 18. नदी या समुद्र के किनारे की भूमि 20. भूत, वर्तमान और भविष्य 21. जंगल

Solution 12199

प	ह	न	ना	■	जी	व	न
र	■	ह	रा	र	त	■	जं
चू	न	र	■	न	■	क	र
न	ख	■	क	वा	य	द	■
■	शि	ला	न्या	स	■	ली	ख
सु	ख	द	■	■	भ	व	न
ल	■	ना	■	भ	या	न	क
ह	त्या	■	प	ट	ना	■	ना

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में आर्थिक योजनाओं में सुधार होगा, मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, वर्ष के मध्य में भाईयों के सहयोग से शत्रु पक्ष परास्त होगा, वाहन पशु आदि से लाभ होगा, आर्थिक क्षेत्र में कमी केकारण योजनायें वाधित होंगी, परिश्रम की अधिकता रहेगी, प्रियजनों के कारण कार्यो में हानि हो सकती है.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों का वाहन पशु आदि का लाभ प्राप्त होगा, भाईयों के सहयोग से शत्रु पक्ष परास्तहोगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को आर्थिक योजनाओं में वृद्धि होगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी,मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को वाणी कठोरता केकारण विवादों का सामना करना पड़ सकता है, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को आर्थिक कार्यो में योजनायें वाधित होंगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को आर्थिक मामलों में सावधानी रखकर कार्य करना हितकर रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को यात्रा में हानि हो सकती है.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान और मिलनसार होगा, स्वाभाव में क्रोध का भाव रहेगा, निर्णय लेने में सक्षम रहते हैं, ये किसी के अधिनस्थ काम करना पसंद नहीं करते, इनका भाग्योदय जन्म स्थान से दूर होता है.

मेष- साझेदारी में कार्य शुरू कर सकते हैं, आपसी बातचीत से मामले सुलझेंगे, भौतिक सुख साधनों की पूर्ति होगी, संपत्ति विवाद का समाधान होगा.

वृषभ- युवाओं को कैरियर में बेहतर सफ्लता मिलेगी, जल्दबाजी में गलती हो सकती है, धार्मिक यात्रा का योग है, अनावश्यक परिश्रम होगा.

मिथुन- अच्छे अवसर सामने आयेंगे, अनुशासन की कमी से कार्यस्थल की व्यवस्था बिगड़ सकती है, पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा,

कर्क- पुराना विवाद हल होगा, तीखी बातों से करीबी नाराज हो सकते हैं, यात्रा सुखद रहेगी, मानसिक प्रसन्नता रहेगी, लाभ होगा, पर कम.

सिंह- समय पर मदद न मिलने से निराशा होगी, भावुकता में लिये फैसले बदलने पड़ सकते हैं, समय के अनुरूप कार्य करे, पुराना कार्य बनेगा.

कन्या- मित्रों से कहासुनी हो सकती है, सहकर्मी नुकसान पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं, श्रम प्रयास से अभीष्ट की प्राप्ति होगी, नौकर चाकरों का सहयोग मिलेगा,

तुला- पारिवारिक योजना में परिवर्तन होगा, आकस्मिक धनलाभ होगा, नवीन वस्त्राभूषण की प्राप्ति होगी, निजी कार्यो में खर्च होगा.

वृश्चिक- प्रतियोगी परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन की संभावना, भाग्यवर्धक समाचार मिलेगा, आत्म विश्वास मनोबल बना रहेगा.

धनु- लेनदेन को लेकर आप पर आरोप-प्रत्यारोप लग सकते हैं, वाहन चलाने में सावधानी रखें, प्रियजनों से विवाद को टालें, व्यर्थ व्यय होगा.

मकर- व्यापार में नये लोग साथ आ सकते हैं, कार्यक्षेत्र में बदलाव लाभकारी रहेगा, पारिवारिक सुख मिलेगा, पुराना कार्य बनेगा, संतोष मिलेगा.

कुम्भ- लेनदेन का मामला सुलझने का आसार है, भौतिक सुख सुविधा पर खर्च होगा, जोखिम के कार्यो में रूचि रहेगी, मनोकांक्षा की पूर्ति होगी.

मीन- अनुभव की कमी से लाभ की योजना हाथ से निकल सकती है, अपने खर्च पर कटौती कर परिवार पर खर्च करेंगे, किये गये प्रयासों में लाभ होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

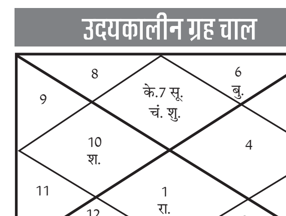

पंचांग

रा.मि. 26 संवत् 2082 चैत्र कृष्ण त्रयोदशी भौमवासरे दिन 7/51, शतभिषा नक्षत्रे रातअंत 5/23, सिद्ध योगे प्रात: 7/14 तदुपरि साध्य योगे रातअंत 5/51, वणिज करणे सू.उ. 6/3, सू.अ. 5/57, चन्द्रचार कुम्भ, शु.रा. 11,1,2,5,6,8 अ.रा. 12,3,4,7,9,10 शुभांक- 4,6,0.

व्यापार भविष्य

चैत्र कृष्ण त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, कपास, मोती, पुखराज, अलसी, उड़द, घी, तिल, गुड़, खांड़, रूई, कपास, में तेजी होगी, वायदा विचार आज 1 बजकर 18 मिनिट से 25 मिनिट के रूख पर व्यापार कर लाभ उठायें, भाग्यांक 3725 है.

SUDOKU 7332

3	9				1			
5	4			6	8		1	3
		1		7		9	5	
	8	9		5	3		4	7
6	1		4	9		2	3	
	3	4		1		8		
7	5		8	3			2	4
			6				7	9

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-दोकू 7331

9	6	2	3	4	1	7	5	8
1	4	8	9	7	5	6	2	3
5	7	3	2	6	8	1	4	9
3	2	1	6	9	4	8	7	5
4	8	7	5	1	2	9	3	6
6	9	5	8	3	7	4	1	2
8	3	4	7	2	6	5	9	1
2	1	6	4	5	9	3	8	7
7	5	9	1	8	3	2	6	4